

कोलना स.क्रि. (देश.) लकड़ी, पत्थर आदि के बीच से खोदकर उसे पोला या खाली करना 2. विह्वल होना, घबराना।

कोलाहल पुं. (तत्.) बहुत से लोगों की अस्पष्ट चिल्लाहट, शोर, हल्ला, रौला 2. संगी. एक राग जो कल्याण, कान्हड़ा और विंहाग के मेल से बनता है।

कोलिक स्त्री. (देश.) जुलाहा, तंतुवाय।

कोलिया स्त्री. (देश.) 1. तंग रास्ता, पतली गली 2. छोटा खेत जिसका आकार लंबा और पतला हो।

कोलियाना अ.क्रि. (देश.) 1. तंग गली में चले जाना, तंग गली से चले जाना 2. कोने में छिप कर खड़े होना।

कोलियारी स्त्री. (अं.) पत्थर के कोयले की खान।

कोली स्त्री. (तद्.) 1. गोद, अंकवार 2. कोना, कोण 3. संकरी गली पुं. कोरी, जुलाहा।

कोल्हाड़ पुं. (देश.) वह स्थान जहाँ ऊख पेरकर रस निकाला जाता है और गुड़ बनाया जाता है।

कोल्हू पुं. (देश.) तेल या ईख पेरने का यंत्र जो कुछ कुछ डमरु के आकर का होता है मुहा. कोल्हू काट कर मोंगरी बनाना- कोई छोटी चीज बनाने के लिए बड़ी चीज नष्ट करना; कोल्हू का बैल- बहुत कठिन परिश्रम करने वाला, एक ही जगह बार बार चक्कर लगाने वाला; कोल्हू में डालकर पेरना- बहुत अधिक कष्ट पहुँचाकर प्राण लेना।

कोविद वि. (तत्.) पंडित, विद्वान 2. प्रवीण।

कोविदार पुं. (तत्.) 1. कचनार का पेड़ 2. कचनार का फूल।

कोश पुं. (तत्.) 1. वह ग्रंथ जिसमें अर्थ या पर्याय के सहित शब्द इकट्ठे किए गए हों 2. संचित धन 3. समूह 4. अंड, अंडा 5. संपुट, डिब्बा 6. फूलों की बंधी कली 7. मद्यपात्र 8. पंचपात्र 9. तलवार, कटार आदि का म्यान 10. आवरण, खोल 11. वेदांत के अनुसार जीवात्मा के पाँच

कोश-अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनंदमय 12. थैली।

कोशकार पुं. (तत्.) 1. शब्दकोशों के लिए शब्दों का संग्रह करने वाला 2. तलवार, कटार आदि के लिए म्यान बनाने वाला 3. रेशम का कीड़ा 4. एक प्रकार की ईख।

कोशज पुं. (तत्.) 1. रेशम 2. सीप, शंख, घोघे आदि में रहने वाले जीव 3. मोती, मुक्ता।

कोशपति पुं. (तत्.) कोशाध्यक्ष, खजांची।

कोशल पुं. (तत्.) 1. सरयू या घाघरा नदी के दोनों तटों के आस-पास का क्षेत्र देश 2. उपर्युक्त देश में बसने वाली क्षत्रिय जाति 3. अयोध्या नगर 4. संगी. एक राग जिसमें गांधार और धैवत को कोमल और शेष सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

कोशलिक पुं. (तत्.) उत्कोच, घूस।

कोशवासी पुं. (तत्.) सीप, शंख घोंघा आदि में रहने वाले जीव।

कोशवृद्धि स्त्री. (तत्.) 1. खजाने का बढ़ना 2. अंडवृद्धि का रोग।

कोशिका स्त्री. (तत्.) 1. सतावरी 2. धमनी आदि से निकलने वाली सूक्ष्म नलिकाएँ।

कोशिश पुं. (फा.) प्रयत्न, चेष्टा, उद्योग।

कोशी स्त्री. (तत्.) 1. कली 2. बीजकोश 3. पादुका 4. अन्न की बालों का टूँड

कोशाध्यक्ष पुं. (तत्.) 1. कोश का अध्यक्ष या स्वामी, वह जिसके पास कोश रहता है 2. खजांची, रोकड़िया।

कोष्ठ पुं. (तत्.) 1. उदर का मध्य भाग, पेट का भीतरी हिस्सा 2. शरीर के अंदर का कोई भाग जो किसी आवरण से घिरा हो और जिसके अंदर कोई शक्ति रहती हो जैसे- पक्वाशय, मूत्राशय, गर्भाशय आदि 3. कोठा, घर का भीतरी भाग 4. वह स्थान जहाँ अन्न संग्रह किया जाए, गोला 5. कोश, भंडार 6. प्राकार, कोट, शहर पनाह 7. वह स्थान जो किसी प्रकार चारों ओर से घिरा हो 8.